रहरासि साहिब

रहिरास

सो दरु

रागु आसा महला १ ੴ१ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ।। वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ।। केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ।। गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ।। गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ।। गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ।। गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ।। गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ।। गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ।। गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ।। गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ।। गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ।। गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ।। गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ।। सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ।। होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ।। सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ।। है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ।। रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ।। करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिसदी वडिआई ।। जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ।। सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ।। १।।

आसा महला १ ।।

सुणि वडा आखै सभु कोइ ।। केवडु वडा डीठा होइ ।। कीमति पाइ न कहिआ जाइ ।। कहणै वाले तेरे रहे समाइ ।।१।। वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ।। कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ।।१।। रहाउ ।। सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ।। सभ कीमति मिलि कीमति पाई ।। गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ।। कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ।।२।। सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ।। सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ।। तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ।। करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ।।३।। आखण वाला किआ वेचारा ।। सिफती भरे तेरे भंडारा ।। जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ।। नानक सचु सवारणहारा ।।४।।२।।

आसा महला १ ।।

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ।। आखणि अउखा साचा नाउ ।। साचे नाम की लागै भूख ।। उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ।।१।। सो किउ वसरै मेरी माइ ।। साचा साहिबु साचै नाइ ।।१।। रहाउ ।। साचे नाम की तिलु वडिआई ।। आखि थके कीमति नही पाई ।। जे सभि मिलि कै आखण पाहि ।। वडा न होवै घाटि न जाइ ।।२।। ना ओहु मरै न होवै सोगु ।। देदा रहै न चूकै भोगु ।। गुणु एहो होरु नाही कोइ ।। ना को होआ ना को होइ ।।३।। जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ।। जिनि दिनु करि कै कीती राति ।। खसमु विसारहि ते कमजाति ।। नानक नावै बाझु सनाति।।४।।३।।

रागु गूजरी महला ४ ।।

हरि के जन सतिगुर सत पुरखा बिनउ करउ गुर पासि ।। हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ।।१।। मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ।। गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ।।१।। रहाउ ।। हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ।। हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ।।२।। जिन हरि हरि हरिरसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ।। जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ।।३।। जिन हरिजन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ।। धनु धंनु सतसंगति जितु हरिरसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ।।४।।४।।

रागु गूजरी महला ५ ।।

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ।। सैल पथर महि जंत उपाए ताका रिजकु आगै करि धरिआ ।।१।। मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ।। गुरपरसादि परमपदु पाइआ सूके कासट हरिआ ।।१।। रहाउ ।। जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ।। सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ।।२।। ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ।। तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ।।३।। सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ।। जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ।।४।।५।।

रागु आसा महला ४

सो पुरखु

੧ॐ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ।। सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ।। सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ।। हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ।। हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ।।१।। तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ।। इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ।। तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ।। तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ।। जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ।।२।। हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ।। से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ।। जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ।। जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी।। से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ।।३।। तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ।। तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ।। तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ।। तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ।। से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ।।४।। तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु

अवरु न कोई ।। तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ।। तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ।। तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ।। जन नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ।।५।।१।।

आसा महला ४ ।।

तूं करता सचिआर मैडा सांई ।। जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ।।१।। रहाउ ।। सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ।। जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ।। गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ।। तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ।।१।। तूं दरीआउ सभ तुझही माहि ।। तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ।। जीअ जंत सभि तेरा खेलु ।। विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ।।२।। जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ।। हरगुणि सद ही आखि वखाणै ।। जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ।। सहजे ही हरिनामि समाइआ ।।३।। तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ।। तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ।। तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ।। जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ।। ४।। २।।

आसा महला १ ।।

तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ।। पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ।।१।। मन एकु न चेतसि मूड़ मना ।। हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ।।१।। रहाउ ।। ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ।। प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही विसरिआ ।।२।।३।।

आसा महला ५ ।।

भई परापति मानुख देहुरीआ ।। गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ।। अवरि काज तेरै कितै न काम ।। मिलु साध संगति भजु केवल नाम ।।१।। सरंजामि लागु भवजल तरन कै ।। जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ।।१।। रहाउ ।। जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ।। सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ।। कहु नानक हम नीच करंमा ।। सरणि परे की राखउ सरमा ।। २।।४।।

पाः १० कबियोबाच बेनती ।। चौपई ।।

हमरी करो हाथ दै रछ्छा ।। पूरन होइ चित की इछ्छा ।। तव चरनन मन रहै हमारा ।। अपना जान करो प्रतिपारा ।।१।। हमरे दुसट सभै तुम घावहु ।। आपु हाथ दै मोहि बचावहु ।। सुखी बसै मोरो परिवारा ।। सेवक सिख्ख सभै करतारा ।।२।। मो रछ्छा निज कर दै करियै़ ।। सभ बैरन को आज संघरियै़ ।। पूरन होइ हमारी आसा ।। तोर भजन की रहै पिआसा ।।३।। तुमहि छाडि कोई अवर न धियाऊं ।। जो बर चहों सु तुम ते पाऊं ।। सेवक सिख्ख हमारे तारीअहि ।। चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ।।४।। आप हाथ दै मुझै उबरियै़ ।। मरन काल का त्रास निवरियै़ ।। हूजो सदा हमारे पछ्छा ।। स्री असिधुज जू करियहु रछ्छा ।।५।।राखि लेहु मुहि राखनहारे ।। साहिब संत सहाइ पियारे ।। दीन बंधु दुसटन के हंता ।। तुमहो पुरी चतुर दस कंता ।।६।। काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ।। काल पाइ सिवजू अवतरा ।। काल पाइ कर बिसनु प्रकासा ।। सकल काल का कीआ तमासा ।।७।।

जवन काल जोगी सिव कीओ ।। बेदराज ब्रहमा जू थीओ ।। जवन काल सभ लोक सवारा ।। नमसकार है ताहि हमारा ।।८।। जवन काल सभ जगत बनायो ।। देव दैत जछ्छन उपजायो ।। आदि अंति एकै अवतारा ।। सोई गुरू समझियहु हमारा ।।९।। नमसकार तिस ही को हमारी ।। सकल प्रजा जिन आप सवारी ।। सिवकन को सिवगुन सुख दीओ ।। सत्त्रन को पल मो बध कीओ।। १०।। घट घट के अंतर की जानत ।। भले बुरे की पीर पछानत ।। चीटी ते कुंचर असथूला ।। सभ पर क्रिपा द्रिसटि कर फूला ।।११।। संतन दुख पाए ते दुखी ।। सुख पाए साधुन के सुखी ।। एक एक की पीर पछानैं ।। घट घट के पट पट की जानैं ।।१२।। जब उदकरख करा करतारा ।। प्रजा धरत तब देह अपारा ।। जब आकरख करत हो कबहूं ।। तुम मै मिलत देह धर सभहूं ।। १३।। जेते बदन स्रिसटि सभ धारै ।। आपु आपनी बूझ उचारै ।। तुम सभही ते रहत निरालम ।। जानत बेद भेद अर आलम ।।१४।। निरंकार न्रिबिकार निरलंभ ।। आदि अनील अनादि असंभि ।। ताका मूड्ह उचारत भेदा ।। जाको भेव न पावत बेदा ।।१५।। ताको करि पाहन अनुमानत ।। महा मूड्ह कछु भेद न जानत ।। महादेव को कहत सदा सिव ।। निरंकार का चीनत नहि भिव ।।१६।। आपु आपनी बुधि है जेती ।। बरनत भिंन भिंन तुहि तेती ।। तुमरा लखा न जाइ पसारा ।। किह बिधि सजा प्रथम संसारा ।। १७।। एकै रूप अनूप सरूपा ।। रंक भयो राव कही भूपा ।। अंडज जेरज सेतज कीनी ।। उतभुज खानि बहुर रचि दीनी ।।१८।। कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ।। कहूं सिमटि भियो संकर इकैठा ।। सगरी स्रिसटि दिखाइ अचंभव ।। आदि जुगादि सरूप सुयंभव ।।१९।। अब रछ्छा मेरी तुम करो ।। सिख्ख उबारि असिख्ख संघरो ।। दुशट जिते उठवत उतपाता ।। सकल मलेछ करो रण घाता ।। २०।। जे असिधुज तव सरनी परे ।। तिनके दुशट दुखित ह्वै मरे ।। पुरख जवन पग परे तिहारे ।। तिनके तुम संकट सभ टारे ।।२१।। जो कलि को इक बार धिऐ है ।। ताके काल निकटि नहि ऐहै ।। रछ्छा होइ ताहि सभ काला ।। दुसट अरिसट टरें ततकाला ।।२२।। क्रिपा द्रिसटि तन जाहि निहरिहो ।। ताके ताप तनक मो हरिहो ।। रि़ध्धि सिध्धि घर मो सभ होई ।। दुशट छाह छ्वै सकै न कोई ।।२३।। एक बार जिन तुमै संभारा ।। काल फास ते ताहि उबारा ।। जिन नर नाम तिहारो कहा ।। दारिद दुसट दोख ते रहा ।।२४।। खड़ग केत मै सरण तिहारी ।। आप हाथ दै लेहु उबारी ।। सरब ठौर मो होहु सहाई ।। दुसट दोख ते लेहु बचाई ।।२५।।

स्वैया ।।

पांइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नहीं आन्यो ।।
राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ।।
सिंम्रित सासत्र बेद सभै बहु भेद कहैं हम एक न जान्यो।।
स्री असिपान क्रिपा तुमरी करि मै न कह्यो सभ तोहि बखान्यो ।।

दोहरा ।।

सगल दुआर कउ छाडिकै गहिओ तुहारो दुआर ।।
बांहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ।।

रामकली महला ३ अनंदु

ੴ१ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ।। सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ।। राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ।। सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ।। कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ।। १।। ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ।। हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ।। अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ।। सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ।। कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ।।२।। साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ।। घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ।। सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ।। नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ।। कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ।।३।। साचा नामु मेरा आधारो ।। साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ।। करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ।। सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ।। कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ।। साचा नामु मेरा आधारो ।।४।। वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ।। घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ।। पंच दूतु तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ।। धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ।। कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ।।५।। अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ।। पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ।। दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ।। संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ।। सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ।। बिनवंति नानकु गुर चरन लागे वाजे अनहद तूरे ।।४०।।१।।

मुंदावणी महला ५ ।।

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ।। अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिसका सभसु अधारो ।। जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ।। एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरिधारो ।। तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ।।१।।

सलोक महला ५ ।।

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ।। मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ।। तरसु पिआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ।। नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ।।१।।

(((((((((((((((----------)))))))))))))))